RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
फरवरी
12
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

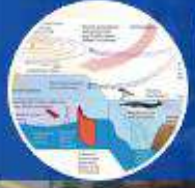

By Ankit Avasthi Sir

परमाणु दायित्व कानून में संशोधन / Amendments to the Nuclear Liability Act

संदर्भ:

भारत ने **न्यूक्लियर सेक्टर में अमेरिकी और फ्रांसीसी** कंपनियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए **सिविल लायबिलिटी फॉर न्यूक्लियर डैमेज एक्ट, 2010** और एटॉमिक एनर्जी एक्ट, 1962 में संशोधन करने की योजना घोषित की है।

भारत के परमाणु उत्तरदायित्व कानून में संशोधन के कारण:

1. विदेशी कंपनियों की चिंताओं का समाधान-

- **CLNDA, 2010** में आपूर्तिकर्ताओं (suppliers) पर भारी जिम्मेदारी, जिससे निवेश हतोत्साहित हुआ।
- अंतरराष्ट्रीय मानकों (**CSC**) में मुख्य रूप से **संचालकों (operators) को उत्तरदायी** ठहराया जाता है।
- **भोपाल गैस त्रासदी (1984)** और **फुकुशिमा दुर्घटना (2011)** के कारण भारत ने कड़े नियम बनाए।
- **अमेरिकी और फ्रांसीसी कंपनियां** इन सख्त नियमों को वित्तीय जोखिम मानती हैं।

2. भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता का विस्तार-

- **वर्तमान क्षमता**: **6,780 मेगावाट (22 रिएक्टर)**, केवल **रूस की रोसाटॉम विदेशी ऑपरेटर**।
- **2025 के बजट में ₹20,000 करोड़** परमाणु ऊर्जा के लिए आवंटित।
- **लक्ष्य**: 2047 तक **100 GW परमाणु ऊर्जा** उत्पादन।
- **SMRs (छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर) विकसित करने की योजना** – 2033 तक 5 इकाइयां।

3. अमेरिका और फ्रांस के साथ रणनीतिक साझेदारी मजबूत करना-

- **भारत-अमेरिका परमाणु समझौता (2008)** उत्तरदायित्व मुद्दों के कारण रुका हुआ।
- **फ्रांस की EDF कंपनी** का जैतापुर प्रोजेक्ट वर्षों से अटका हुआ।
- **पीएम मोदी की वॉशिंगटन और पेरिस यात्राओं** का लक्ष्य – **परमाणु निवेश में आ रही रुकावटें हटाना**।

न्यायिक दायित्व (सिविल लायबिलिटी) परमाणु क्षति अधिनियम, 2010 (CLNDA):

2010 में अधिनियमित, यह कानून परमाणु दुर्घटनाओं के पीड़ितों को त्वरित मुआवजा प्रदान करने के लिए बनाया गया।

- परमाणु संयंत्र ऑपरेटर की कड़ी और दोष-रहित (Strict & No-Fault) जिम्मेदारी तय की गई है, यानी गलती चाहे किसी की भी हो, ऑपरेटर उत्तरदायी रहेगा।

प्रतिगमन का अधिकार (Right to Recourse):

- ऑपरेटर मुआवजा देने के बाद निम्नलिखित स्थितियों में आपूर्तिकर्ता (Supplier) पर कानूनी कार्रवाई कर सकता है:
  1. यदि आपूर्तिकर्ता या उसके कर्मचारी द्वारा दोषपूर्ण उपकरण, सामग्री या निम्न-स्तरीय सेवाएं प्रदान की गई हों।
  2. यदि किसी व्यक्ति द्वारा जानबूझकर किए गए कार्य से परमाणु क्षति हुई हो।

वित्तीय सुरक्षा (Financial Security):

- ऑपरेटर को **अधिकतम ₹1,500 करोड़** तक की परमाणु क्षति का बीमा या अन्य वित्तीय सुरक्षा रखनी होगी।
- यदि दावा ₹1,500 करोड़ से अधिक होता है, तो केंद्र सरकार शेष राशि वहन करेगी।
- सरकार की अधिकतम देनदारी 300 मिलियन SDRs (लगभग ₹2,100 - ₹2,300 करोड़) होगी।

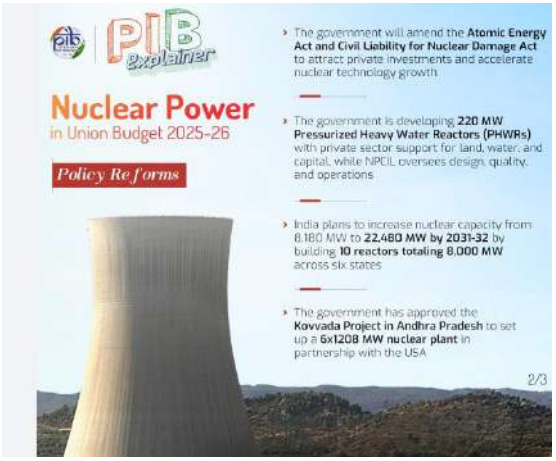

CLNDA में संशोधन की चुनौतियाँ:

घरेलू राजनीतिक विरोध-

- **2010 का CLNDA** कड़े सार्वजनिक और संसदीय बहस के बाद पारित हुआ, जिसमें **विदेशी कंपनियों की जवाबदेही** सुनिश्चित की गई थी।
- **आपूर्तिकर्ताओं की जिम्मेदारी कम करने वाले संशोधन** विपक्षी दलों और नागरिक संगठनों के विरोध का सामना कर सकते हैं।

कानूनी और नियामक अनिश्चितता-

- विशेषज्ञ **वैश्विक मानकों के अनुरूप** CLNDA में बदलाव का समर्थन करते हैं, लेकिन संशोधनों की संरचना पर संदेह है।
- **विदेश मंत्रालय** ने संशोधनों के विवरण साझा करने से इनकार कर दिया है।

निवेशकों का विश्वास और बीमा संबंधी समस्याएँ-

- **2019 में ₹1,500 करोड़ का बीमा पूल** बनाया गया, लेकिन यह बड़े निवेशकों को आकर्षित नहीं कर पाया।
- संशोधन **वैश्विक कंपनियों और भारतीय संचालकों** को उचित कानूनी सुरक्षा और मुआवजा ढांचा प्रदान करने चाहिए।

मोरंड-गंजाल सिंचाई परियोजना / Morand-Ganjal Irrigation Project

संदर्भ:

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) ने चेतावनी दी है कि मध्य प्रदेश में **मोरंड-गंजाल सिंचाई परियोजना** से **सतपुड़ा और मेलघाट टाइगर रिजर्व** के महत्वपूर्ण बाघ आवास जलमग्न हो सकते हैं, जिससे वहां के वन्यजीवों को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

मोरंड-गंजाल सिंचाई परियोजना:

- **स्वीकृति और प्रस्तावना:** **1972** में प्रस्तावित, लेकिन **2017** में सरकार से मंजूरी मिली।
- **परियोजना का उद्देश्य:**
  - मध्य प्रदेश में **कृषि उत्पादकता** बढ़ाने के लिए एक बांध आधारित सिंचाई परियोजना।
- **संबंधित नदियाँ:**
  - मोरंड और गंजाल नदियाँ।
  - दोनों नर्मदा नदी की सहायक नदियाँ हैं।
  - गंजाल – नर्मदा की बाएँ किनारे (Left Bank) की सहायक नदी।
  - मोरंड – गंजाल की एक प्रमुख सहायक नदी।
- **भौगोलिक विस्तार:**
  - मध्य प्रदेश के **होशंगाबाद, बैतूल, हरदा और खंडवा** जिले शामिल।

बाघ आवास पर प्रभाव:

- **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)** के विश्लेषण के अनुसार, परियोजना स्थल बाघों के लिए महत्वपूर्ण आवास है।
- वन क्षेत्र के **जलमग्न होने से अभ्यारण्यों के बीच बाघों** की आवाजाही बाधित होगी।
- यह **बाधा बाघों के आनुवंशिक आदान-प्रदान और जनसंख्या स्थिरता** के लिए खतरा बन सकती है।
- **NTCA ने चेतावनी दी है कि यह** पारिस्थितिकीय व्यवधान बाघों और अन्य वन्यजीवों पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

परियोजना का आदिवासी समुदायों पर प्रभाव:

- 600 से अधिक कोरकू जनजाति के लोग सीधे विस्थापित होंगे।
- कोरकू जनजाति जंगलों पर अपनी आजीविका, भोजन, औषधीय पौधों और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए निर्भर करती है।

आजीविका का नुकसान:

- पारंपरिक खेती के तरीकों का अंत होगा।
- अजनबी क्षेत्रों में विस्थापन से सांस्कृतिक क्षरण होगा।

सामाजिक अशांति: विस्थापन से विरोध प्रदर्शन और सामाजिक अस्थिरता की आशंका।

सामाजिक-आर्थिक चिंताएँ: NTCA ने कहा कि डूबने वाले क्षेत्र न केवल बाघों के लिए बल्कि विविध वन्यजीवों और जैव विविधता के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

परियोजना के लिए सिफारिशें

विकल्पों की खोज: NTCA ने मध्य प्रदेश सरकार को वैकल्पिक स्थल तलाशने की सिफारिश की, ताकि वन्यजीवों पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

बाघ गलियारों का निर्माण: बाघों की आवाजाही बनाए रखने के लिए वैकल्पिक गलियारे विकसित किए जाएं।

परियोजना का पुन: डिज़ाइन: जलाशय का आकार कम करने या सुरंग-आधारित सिंचाई प्रणाली अपनाने पर विचार किया जाए।

सरकारी समीक्षा और वन भूमि हस्तांतरण: 2025 में वन सलाहकार समिति (FAC) ने 2,250 हेक्टेयर वन भूमि को परियोजना के लिए डायवर्ट करने का प्रस्ताव दिया।

आदिवासियों का पुनर्वास: उचित मुआवजा, वैकल्पिक आवास और आजीविका प्रशिक्षण प्रदान कर कोरकू जनजाति के पुनर्वास की व्यवस्था हो।

दीर्घकालिक समाधान: पर्यावरण-अनुकूल उपाय जैसे माइक्रो इरिगेशन, शुष्क कृषि (Dry Land Agriculture) और कृषि वानिकी (Agroforestry) को बढ़ावा देकर पानी की मांग कम की जाए।

डिफेंस पार्टनरशिप–इंडिया (DP-I) / Defence Partnership–India (DP-I)

संदर्भ:

भारत और यूके ने एयरो इंडिया 2025 में कई रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इनमें **"डिफेंस पार्टनरशिप–इंडिया (DP-I)"** की शुरुआत, अगली पीढ़ी के हथियारों पर सहयोग, और हैदराबाद में **ASRAAM मिसाइल असेंबली फैसिलिटी** की स्थापना शामिल है।

डिफेंस पार्टनरशिप – इंडिया (DP-I):

- UK के रक्षा मंत्रालय के तहत एक समर्पित इकाई।
- भारत-यूके रक्षा सहयोग को बढ़ाने के लिए "वन-स्टॉप सेंटर" के रूप में कार्य करता है।
- रक्षा खरीद (Defence Procurement) और तकनीकी आदान-प्रदान (Technology Exchange) को सरल बनाने के उद्देश्य से स्थापित।

मुख्य समझौते और अनुबंध:

- एयरो इंडिया के दौरान कई रक्षा अनुबंधों पर हस्ताक्षर।
- **Thales UK और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (BDL)** ने लेजर बीम राइडिंग मैन-पोर्टेबल एयर डिफेंस सिस्टम (MANPADS) प्रदान करने पर सहमति जताई।
- प्रारंभिक आपूर्ति में STARStreak हाई-वेलोसिटी मिसाइलें शामिल।
- इसके अलावा, हल्की बहुउद्देश्यीय मिसाइल (LMM) के उत्पादन की योजना भी बनाई गई।

भारत में ASRAAM असेंबली:

- MBDA **U.K. और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (BDL) हैदराबाद** में एक ASRAAM (Advanced Short-Range Air-to-Air Missile) असेंबली और परीक्षण सुविधा स्थापित कर रहे हैं।
- ये मिसाइलें **जगुआर (Jaguar) और LCA-Mk1A विमानों** में इस्तेमाल होंगी और निर्यात के लिए भी बनाई जाएंगी।

समुद्री सहयोग (Maritime Collaboration):

- भारतीय नौसेना के लिए **एकीकृत पूर्ण इलेक्ट्रिक प्रणोदन (IFEP) प्रणाली** विकसित करने हेतु एक "Statement of Intent" (SoI) पर हस्ताक्षर किए गए।
- **GE Vernova और BHEL** भारत की पहली समुद्री "Land-Based Testing Facility" पर काम कर रहे हैं, जो 2030 तक लैंडिंग प्लेटफॉर्म डॉक (LPD) विकास का समर्थन करेगी।

रणनीतिक प्रभाव:

- **DP-I और अन्य रक्षा समझौते** भारत-यूके रक्षा सहयोग में रणनीतिक बदलाव का संकेत देते हैं।
- ये पहल आपसी सुरक्षा चिंताओं को दूर करने और दोनों देशों की सेनाओं के बीच अंतरसंचालनीयता (Interoperability) बढ़ाने के उद्देश्य से की गई हैं।
- इन साझेदारियों से रोजगार सृजन और दोनों देशों की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

भारत-यूके संबंधों का महत्व

1. **बहु-स्तरीय संबंधों को गहराई मिलना: रोडमैप 2030** (भारत-यूके वर्चुअल समिट, 2021) के तहत **भारत-यूके संबंधों को "व्यापक रणनीतिक साझेदारी"** (CSP) तक बढ़ाने का लक्ष्य।
2. **इंडो-पैसिफिक में 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' के रूप में भूमिका:** यूके की "इंडो-पैसिफिक टिल्ट" रणनीति भारत के हितों के अनुरूप।
3. **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) पर ध्यान:** QUAD देश अधिकतर प्रशांत क्षेत्र पर केंद्रित हैं, ऐसे में ब्रिटेन IOR में रणनीतिक साझेदार की भूमिका निभा सकता है।
4. **भारत-यूके रक्षा सहयोग: 2+2 संवाद प्रणाली** उच्च स्तरीय राजनयिक और सैन्य वार्ता के माध्यम से रक्षा सहयोग को तेज कर रही है।
5. **आर्थिक विषमता में अवसर:**
   - भारत की **$4 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था** बनाम यूके की प्रति व्यक्ति आय ($50,000 बनाम $3,000)।
   - भारत यूके के उन्नत क्षेत्रों और विशेषज्ञता का लाभ उठा सकता है, जबकि यूके भारत के विशाल बाजार और कार्यबल तक पहुंच बना सकता है।

भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता:

- **यूके का भारत** की रक्षा महत्वाकांक्षाओं का समर्थन **"आत्मनिर्भर भारत"** (Atmanirbhar Bharat) पहल के अनुरूप है।
- ब्रिटिश उच्चायुक्त ने रक्षा प्रौद्योगिकियों में सहयोग को आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में रेखांकित किया।

वैश्विक उत्तर-दक्षिण सेतु के रूप में भारत / India as a Global North-South Bridge

संदर्भ:

जनवरी 2025 में **18वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन** में प्रधानमंत्री ने **ग्लोबल साउथ** की आवाज को मजबूत करने में भारत की भूमिका को रेखांकित किया। इसी तरह, **तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट 2024** में उन्होंने अधिक समावेशी वैश्विक शासन संरचना के लिए भारत की नेतृत्वकारी भूमिका दोहराई।

वैश्विक उत्तर-दक्षिण विभाजन:

- **परिचय:** यह विभाजन **विकसित (Global North) और विकासशील (Global South) देशों के बीच आर्थिक और राजनीतिक अंतर** को दर्शाता है।
- **वैश्विक उत्तर (Global North):** समृद्ध, औद्योगीकृत देश जैसे **अमेरिका, यूरोप, जापान, ऑस्ट्रेलिया।**
- **वैश्विक दक्षिण (Global South):** विकासशील और अल्पविकसित देश जैसे **भारत, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, दक्षिण-पूर्व एशिया।**
- **भारत की भूमिका:**
  - भारत इस अंतर को पाटने की महत्वाकांक्षा रखता है।
  - वैश्विक दक्षिण के हितों का प्रतिनिधित्व करता है और
  - वैश्विक उत्तर के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखता है।

वैश्विक उत्तर-दक्षिण विभाजन का उदय:

- **शीत युद्ध के बाद नया वैश्विक वर्गीकरण:**
  - **1991 में सोवियत संघ (USSR)** के विघटन के बाद पूर्व-पश्चिम (East-West) वर्गीकरण अप्रासंगिक हो गया।
  - नई वैश्विक गुटबंदी उभरने लगी, जिससे उत्तर-दक्षिण (North-South) विभाजन स्पष्ट हुआ।
- **आर्थिक और राजनीतिक जटिलताओं की पहचान:**
  - पूर्व-पश्चिम विभाजन वैश्विक आर्थिक असमानताओं को सही ढंग से नहीं दर्शा सका।
  - उत्तर-दक्षिण विभाजन ने विकसित और विकासशील देशों के बीच वास्तविक अंतर को उजागर किया।

वैश्विक दक्षिण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- अधिकांश वैश्विक दक्षिण देश उपनिवेशवाद के इतिहास से जुड़े रहे हैं।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) जैसे वैश्विक संस्थानों में इनकी भागीदारी सीमित बनी हुई है।

वैश्विक उत्तर-दक्षिण विभाजन के कारण:

औपनिवेशिक विरासत: यूरोपीय उपनिवेशवाद ने वैश्विक दक्षिण से संसाधनों का दोहन किया, जिससे ये राष्ट्र अविकसित रह गए।

आर्थिक असमानता: वैश्विक उत्तर अधिकांश संपत्ति, व्यापार और तकनीक पर नियंत्रण रखता है, जबकि दक्षिण औद्योगीकरण में पीछे है।

संस्थागत असमानताएँ: आईएमएफ (IMF), विश्व बैंक (World Bank) और डब्ल्यूटीओ (WTO) जैसी वैश्विक वित्तीय संस्थाएँ उत्तर के पक्ष में झुकी हुई हैं, जो दक्षिण पर कठोर शर्तें लागू करती हैं।

जलवायु परिवर्तन की ज़िम्मेदारी: विकसित देशों ने ऐतिहासिक रूप से अधिक कार्बन उत्सर्जन किया, लेकिन विकासशील राष्ट्र जलवायु आपदाओं का अधिक प्रभाव झेलते हैं।

भारत द्वारा वैश्विक दक्षिण का समर्थन:

- भारत की **वर्तमान वैश्विक दक्षिण नीति गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) से अलग है**, जो मुख्य रूप से **उपनिवेशवाद** के खिलाफ और पश्चिमी देशों की आलोचना पर केंद्रित था।
- आज भारत **विकासशील देशों के साथ मजबूत संबंध बना रहा है**, साथ ही अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ साझेदारी को भी गहरा कर रहा है।

चुनौतियाँ भारत की भूमिका में:

- **आर्थिक सीमाएँ** – घरेलू समस्याएँ (गरीबी, बुनियादी ढाँचे की कमी, वित्तीय बाधाएँ)
- **रणनीतिक संतुलन** – चीन (BRICS भागीदार) से संबंध बनाते हुए उसके प्रभाव का सामना करना
- **पश्चिमी सहयोगियों से संतुलन** – अमेरिका, EU से अच्छे संबंध बनाए रखना, विकासशील देशों को अलग किए बिना
- **संस्थागत विरोध** – पश्चिमी वित्तीय संस्थानों द्वारा शासन सुधारों का प्रतिरोध

उच्च शिक्षा गुणवत्ता पर नीति आयोग की रिपोर्ट / NITI Aayog Report on Higher Education Quality

संदर्भ:

नीति आयोग ने **'Expanding Quality Higher Education through States and State Public Universities'** शीर्षक से एक नीतिगत रिपोर्ट जारी की है।

- रिपोर्ट में कई महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया है। यह **SPUs में गुणवत्ता संकेतकों, फंडिंग, गवर्नेंस और रोज़गार योग्यता** का मात्रात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
- इन विश्वविद्यालयों को केवल **प्रवेश प्रदान करने से आगे बढ़ाकर विश्व स्तरीय शिक्षा देने** पर जोर दिया गया है। यह बदलाव भारत के भविष्य के लिए एक **कुशल कार्यबल** विकसित करने के लिए आवश्यक है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष:

- **सबसे अधिक फंडिंग:** उच्च शिक्षा फंडिंग में महाराष्ट्र शीर्ष पर है, इसके बाद बिहार और तमिलनाडु का स्थान है।
- **सबसे कम फंडिंग:** सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में उच्च शिक्षा के लिए सबसे कम बजट है।
- **विश्वविद्यालय घनत्व:** राष्ट्रीय औसत विश्वविद्यालय घनत्व **0.8** है।
    - सिक्किम का विश्वविद्यालय घनत्व **10.3** (सबसे अधिक) है, इसके बाद अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, मेघालय और उत्तराखंड का स्थान है।
    - बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में विश्वविद्यालय घनत्व **राष्ट्रीय औसत से कम** है।
- **महिला नामांकन:** केरल, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश में पुरुषों की तुलना में **महिलाओं का नामांकन दर अधिक** है।

कार्यान्वयन रणनीतियाँ:

- रिपोर्ट में **स्वल्पकालिक (Short-term), मध्यमकालिक (Medium-term), और दीर्घकालिक (Long-term)** रणनीतियाँ प्रस्तुत की गई हैं ताकि इसकी सिफारिशों को प्रभावी रूप से लागू किया जा सके।
- प्रत्येक सिफारिश के लिए जिम्मेदार संस्थानों की पहचान की गई है और 125 से अधिक प्रदर्शन संकेतकों (Performance Indicators) को सफलता मापने के लिए प्रस्तावित किया गया है।
- रिपोर्ट का मुख्य जोर शोध की गुणवत्ता, शिक्षण पद्धति और उद्योग-अकादमिक सहयोग को सुधारने पर है।

वित्तीय स्थिति:

- रिपोर्ट में **उच्च शिक्षा पर कुल व्यय को GDP का केवल 0.62%** बताया गया है।
- बुनियादी ढांचे के विकास और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए **इस आवंटन को बढ़ाने की आवश्यकता** पर बल दिया गया है।

सिफारिशें:

रिपोर्ट में **SPUs से संबंधित चार प्रमुख क्षेत्रों** (शिक्षा की गुणवत्ता, फंडिंग और वित्त, गवर्नेंस, और छात्रों की रोज़गार योग्यता) की चुनौतियों को दूर करने के लिए लगभग **80 नीति सिफारिशें** प्रस्तुत की गई हैं।

- **शिक्षा पर केंद्र और राज्यों का संयुक्त निवेश GDP के 6% तक बढ़ाया जाए**, जैसा कि **NEP 2020** में अनुशंसित है।
- **R&D (अनुसंधान और विकास) में सार्वजनिक और निजी निवेश को GDP के 2% तक बढ़ाया जाए**, जैसा कि **आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18** में सिफारिश की गई थी।
- **SPUs के क्लस्टर (समूह) 2-3 स्थानीय समस्याओं की पहचान करें और इन चुनौतियों के समाधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र (Centres of Excellence) स्थापित करें।**
- **राज्य सरकारें एक वित्त एजेंसी स्थापित करने पर विचार करें**, जो **Higher Education Financing Agency (HEFA)** की तर्ज पर विशेष रूप से SPUs के लिए कार्य करे।
- **HEFA (हायर एजुकेशन फाइनेंसिंग एजेंसी)** केंद्र और केनरा बैंक की **संयुक्त उद्यम** है, जिसे **2017 में स्थापित किया गया था।**
- यह नई एजेंसी **बुनियादी ढांचे और शोध सुविधाओं को मजबूत करने** पर केंद्रित होनी चाहिए।

पोटाश / Potash

संदर्भ:

हाल ही में **पंजाब क्षेत्र में पोटाश का भंडार** खोजा गया है, जो भारत की उर्वरक उद्योग को मजबूत करने और आयात निर्भरता कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

- पंजाब के खनन मंत्री बरिंदर कुमार गोयल ने फाजिल्का और श्री मुक्तसर साहिब जिलों में पोटाश भंडार के अन्वेषण की योजना की घोषणा की।
- ये भंडार भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) द्वारा किए गए सर्वेक्षणों में पहचाने गए हैं। इस पहल का उद्देश्य भारत की पोटाश आयात निर्भरता को कम करना और घरेलू उर्वरक उद्योग को मजबूत करना है।

पोटाश (Potash):

- **पोटाश पोटैशियम-समृद्ध खनिजों का एक समूह** है।
- इसका **90% से अधिक उपयोग उर्वरकों में कृषि क्षेत्र के लिए** किया जाता है।
- पोटाश **पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक तीन प्रमुख पोषक तत्वों** में से एक है, अन्य दो **नाइट्रोजन (N) और फास्फोरस (P)** हैं।
- पोटाश के विभिन्न प्रकार होते हैं, जिनमें **सल्फेट ऑफ पोटाश (SOP) और म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP)** शामिल हैं।
    - **SOP (सल्फेट ऑफ पोटाश)**: क्लोराइड-मुक्त होता है और **उच्च-मूल्य वाली फसलों** के लिए उपयुक्त माना जाता है।
    - **MOP (म्यूरेट ऑफ पोटाश)**: इसमें **क्लोराइड होता है** और यह आमतौर पर **गेहूं जैसी कार्बोहाइड्रेट-समृद्ध फसलों** के लिए उपयोग किया जाता है।

भारत में पोटाश उत्पादन:

आयात पर निर्भरता

- भारत **वर्तमान में पोटाश खनन नहीं करता** और पूरी तरह से **आयात पर निर्भर** है।
- **कुल अनुमानित पोटाश संसाधन** (2020 के अनुसार) **23,091 मिलियन टन** हैं।
- **राजस्थान में भारत के कुल पोटाश भंडार का 89%** पाया जाता है।
- **पंजाब में 2019 में पोटाश के भंडार मिले**, लेकिन **व्यासायिक व्यवहार्यता अध्ययन और पर्यावरणीय चिंताओं** के कारण अभी तक खनन शुरू नहीं हुआ है।

भारत में पोटाश भंडार

- **राजस्थान के बाद, पंजाब पोटाश भंडार वाला दूसरा राज्य बना** है।
- पंजाब में **कबरवाला, शेरेवाला और रामसरा** ब्लॉक पहचाने गए हैं, जो **लगभग 18 वर्ग किलोमीटर** में फैले हैं।
- राजस्थान में **नागौर-गंगानगर बेसिन** में बड़े पैमाने पर पोटाश भंडार मौजूद हैं।
- **1974 से 1991 के ऐतिहासिक सर्वेक्षणों** और **2017 के बाद के नए अन्वेषणों** ने इन भंडारों की पुष्टि की है।

वैश्विक पोटाश भंडार और उत्पादन

- **कुल वैश्विक पोटाश भंडार 3.6 बिलियन मीट्रिक टन (MT) पोटैशियम ऑक्साइड समकक्ष** से अधिक हैं।
- **सबसे बड़े भंडार वाले देश**:
    - कनाडा – 1.1 बिलियन MT
    - बेलारूस – 750 मिलियन MT
    - रूस – 650 मिलियन MT

शीर्ष तीन पोटाश उत्पादक देश (2023)

1. कनाडा – 13 मिलियन MT
2. रूस – 6.5 मिलियन MT
3. चीन – 6 मिलियन MT

पोटाश के उपयोग

- **90% से अधिक पोटाश उर्वरक के रूप में उपयोग होता है** और यह **तीन प्रमुख कृषि पोषक तत्वों** (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम - **N-P-K**) में से एक है।
- **पौधों के स्वास्थ्य, पोषण और फसल उत्पादन बढ़ाने** के लिए पोटाश सभी पौधों पर उपयोग किया जा सकता है।
- **सभी पोटाश उर्वरकों में पोटैशियम होता है**, लेकिन यह विभिन्न रूपों में पाया जाता है।
- **सल्फेट ऑफ पोटाश (SOP)**:
    - **एक प्रीमियम पोटाश उर्वरक**, जो **क्लोराइड-मुक्त** होता है।
    - **मुख्य रूप से उच्च-मूल्य वाली फसलों**, जैसे **हरी पत्तेदार फसलें, फल और सब्जियाँ** के लिए उपयोग किया जाता है।
- **म्यूरेट ऑफ पोटाश (MOP)**:
    - इसमें **कुछ मात्रा में क्लोराइड** होता है।
    - यह **गेहूं जैसी कार्बोहाइड्रेट-समृद्ध फसलों** के लिए अधिक उपयुक्त है।

पंजाब में पोटाश खनन की चुनौतियाँ:

- पहचाने गए भंडारों के बावजूद, भारत में पोटाश खनन अभी तक शुरू नहीं हुआ है।
- भूमि अधिग्रहण को लेकर स्थानीय किसानों की चिंताएँ सामने आई हैं।
- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) ने लगभग 450 मीटर गहराई पर पोटाश के भंडार खोजे हैं।
- किसानों को डर है कि उनकी भूमि खनन के लिए अधिग्रहित की जा सकती है, जिसके चलते विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

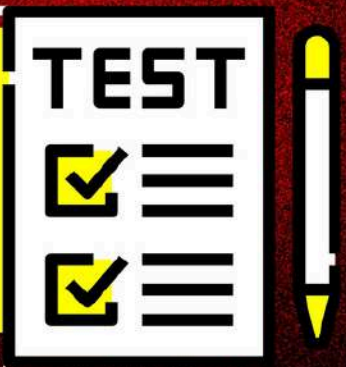

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala 7878158882
Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !